Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
March 2024 5(3), 1375–1384

COMPARATIVE STUDY OF THE IMPACT OF SHRIMAD BHAGAVAD GITA PHILOSOPHY ON SPIRITUAL INTELLIGENCE OF STUDENTS

श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन का विद्यार्थियों के आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

Geetika Sharma [1], Dr. Sangeeta Sharaf [2]

[1] Researcher, MATS School of Education, MATS University, Gullu Arang, Raipur CG
[2] Professor Directory MATS School of Education MATS University, Gullu Arang, Raipur CG

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.4501

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Srimad Bhagavad Gita is a unique text of Indian culture, which is not limited to religious or spiritual perspective, but also provides guidance to understand and live human life in its entirety. This research presents a comparative study of the impact of Shrimad Bhagavad Gita philosophy on spiritual intelligence of students.

During this study, the impact of studying Gita on aspects such as self-awareness, attention, empathy, and stress management of students was measured. The results show that there was a significant improvement in the spiritual intelligence of the students who studied Gita. They showed an increase in self-reflection, patience, and positive attitude towards life.

This research proves that studying Bhagavad Gita can provide students with mental peace, morality, and self-realization, which helps in bringing positive changes in all areas of their life.

Hindi: श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय संस्कृति का एक ऐसा अनुपम ग्रंथ है, जो केवल धार्मिक या आध्यात्मिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं है, बल्कि मनुष्य के जीवन को संपूर्णता में समझने और जीने का मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। यह शोध विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर श्रीमद्भगवद्गीता के दर्शन के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

इस अध्ययन के दौरान, गीता के अध्ययन का विद्यार्थियों की आत्म-जागरूकता, ध्यान, सहानुभूति, और तनाव प्रबंधन जैसे पहलुओं पर प्रभाव मापा गया। परिणाम बताते हैं कि गीता का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में उल्लेखनीय सुधार हुआ। उन्होंने आत्मचिंतन, धैर्य, और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में वृद्धि दिखाई।

Keywords: Srimad Bhagavad Gita Darshan, higher secondary school students, Spiritual Intelligence श्रीमदभगवदगीता दर्शन, उच्चतर माध्यमिक शाला के विदयार्थी,

प्रस्तावना -

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक, और आध्यात्मिक विकास का समग्र रूप से संवर्धन करना है। हालांकि, आधुनिक शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिकता और नैतिकता का स्थान सीमित होता जा रहा है। वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के युग में युवा पीढ़ी को मानसिक तनाव, प्रतिस्पर्धा, और नैतिक पतन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में श्रीमद्भगवद्गीता जैसे ग्रंथ विद्यार्थियों को इन चुनौतियों से निपटने का मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

गीता का दर्शन कर्मयोग, ज्ञानयोग, और भक्ति योग जैसे मार्गों के माध्यम से जीवन को अर्थपूर्ण बनाने का साधन प्रस्तुत करता है। यह आत्मा, कर्तव्य, और धर्म के सिद्धांतों को व्याख्यायित करते हुए विद्यार्थियों को आत्मचिंतन और आत्म-विकास के लिए प्रेरित करता है।

युवा पीढ़ी में मानसिक तनाव और आत्मविकास की कमी आज की प्रमुख समस्याएं हैं। विद्यार्थियों में ध्यान केंद्रित करने की क्षमता, सहिष्णुता, और आत्म-विश्लेषण जैसे गुणों का अभाव दिखाई देता है। यह शोध इस बात का अध्ययन करता है कि श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि के विकास में कैसे सहायक हो सकता है।

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन का एक अमूल्य ग्रंथ है। इसके शिक्षण न केवल धार्मिक, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शक सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं। गीता का उद्देश्य जीवन के गूढ़ रहस्यों को सुलझाना और मनुष्य को मानसिक शांति और आत्मिक संतोष की ओर ले जाना है। आज की शिक्षा प्रणाली में तेजी से बढ़ती प्रतिस्पर्धा, तनाव और मानसिक अस्थिरता के कारण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस शोध का उद्देश्य है कि गीता के सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार समाहित किया जा सकता है ताकि विद्यार्थियों के आध्यात्मिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हो सके।

प्रयुक्त पदों की प्रकार्यात्मक क्रियात्मक शब्दों की परिभाषा -

श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन – श्रीमद्भगवद्गीता को पढ़ना हमें जीवन के बारे में सच्चाई से परिचित कराता है और अंधविश्वास व झूठी मान्यताओं से मुक्ति पाने में हमारी मदद करता है । गीता से प्राप्त ज्ञान हमारे संदेहों को दूर करता है । और हमारे आत्मविश्वास का निर्माण करता है ।

कहा जाता है कि कोई भी कथा सुनने का फायदा तभी होता है, जब हम उस कथा के रस को अपने जीवन में उतारें और उसका स्मरण करें, तभी इससे जीवन में मंगल और आनंद की प्राप्ति होगी, अन्यथा उस कथा का हमारे जीवन में कोई महत्व नहीं रह जाता अपितु वह केवल मनोरंजन बनकर रह

जाता है । एक कान से सुनकर बाद में दूसरे कान से निकलने वाली बात हो जाती है ।

श्रीमद्भगवद्गीता का महात्म्य वस्तुतः वर्णनातीत है । यह इतना रहस्यमय है कि जितनी बार इसका अध्ययन अनुशीलन कीजिए उतनी ही बार यह नित नूतन भाव लेकर समक्ष आती है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि यह स्वयं भगवान के मुख से निकली है । उनके द्वारा मानव मात्र के कल्याण हेतु कही गई है । यूँ तो श्रीमद्भगवद्गीता के 18 अध्याय में ज्ञान, भक्ति, कर्म, सन्यासादिक योगों का विषद वर्णन है लेकिन ''कर्म योग'' गीता का प्रधान योग है। तीसरा अध्याय ही पूर्णतः कर्म योग पर केंद्रित है । अध्याय के प्रारंभ से ही अर्जुन योगेश्वर श्री कृष्ण से पूछते हैं । अर्जुन उवाच ''ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन'' ।

प्राचीन भारतीय संस्कृत महाकाव्य महाभारत का एक भाग भागवत गीता को समर्पित है। यह एक महत्वपूर्ण हिंदू धार्मिक ग्रंथ है, जिसे राजकुमार अर्जुन और हिंदू भगवान विष्णु के बीच बातचीत के रूप में लिखा गया है, यह संभवतः पहली या दूसरी शताब्दी में लिखा गया था इसके लिए अक्सर गीता शब्द का प्रयोग किया जाता है श्रीमद्भगवद्गीता नाम संस्कृत वाक्यांश भगवान का गीत से लिया गया है ।

श्रीमद्भगवद्गीता उन लोगों के लिए लिखी गई है जो सभी भ्रमों से मुक्त होना चाहते हैं यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि अर्जुन ही एक मात्र व्यक्ति था जिसका आशय कृष्ण ने कहा था यह ''सत्य'' है । यह सभी के लिए है । जब आप सत्य की खोज में उलझन में हो वह उस उलझन को दूर करने में सभी को ज्ञान प्राप्त होगा।

जाति, पंथ, धर्म या राष्ट्रीयता के बावजूद श्रीमद्भगवद्गीता उन लोगों के लिए आकर्षण साबित हुई है जो सत्य को खोज करते हैं पूर्णता के लिए प्रयास करते हैं और हर चीज के व्यापक विज्ञान में रुचि रखते हैं लगभग 5000 वर्ष पहले भगवान कृष्ण भगवान के सर्वोच्च व्यक्तित्व ने महाभारत युद्ध के मैदान में अर्जुन से जीवन के विज्ञान के बारे में बात की थी । जैसा कि अब इस पवित्र पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है ।

जिन प्रश्नों को पूछने के लिए हमें प्रशिक्षित किया गया है उनके बजाय महत्वपूर्ण और गहरे प्रश्नों पर विचार करें, जैसे-मेरी स्थिति क्या है ? और परमेश्वर के साथ मेरा क्या संबंध है?

मानव जीवन का मूल्य यह सिखाता है कि मानव जीवन कितना कीमती है ? अपने घर में मनुष्य बनाम कुल जीवित प्राणियों के प्रतिशत पर विचार करें और कैसे भगवान ने जीवित रहने के लिए पहले से ही हर प्रावधान किया है,

इस पर भी विचार करें ।

हमारा अनुभव है कि दुनिया में पहचान का संकट है और लोग भ्रमित है । हमारी असली पहचान यह है कि हम आत्मा है और हम स्वाभाविक रूप से खुश हैं अर्थात् सद्-चित-आनंद। हम हर जगह खुशी की तलाश करते हैं हालांकि हम लगातार क्षणिक मृत् चीजों जैसे- परिवार और देश में खुशी की तलाश करते हैं, लेकिन हमारा प्रयास व्यर्थ है क्योंकि हम कभी भी स्थाई खुषी का अनुभव नहीं करते हैं । इस तथ्य के बावजूद कि हमारी प्रकृति शाश्वत् है और हम शाश्वत् खुशी की तलाश करते हैं ।

निस्वार्थ प्रेम खुशी का सच्चा स्रोत है। जैसा कि इस तथ्य से पता चलता है कि भले ही एक मां कुछ भी नहीं खाती है फिर भी अपने बच्चों को खिलाती है खिलाने में आनंदित होती है। यदि वह ईश्वर से प्रेम करने का अभ्यास कर सकती है । जीवन की पूर्णता तब होगी जब आप ईश्वर से इसी प्रकार प्रेम कर सकें । चूँकि हिंदू, मुस्लिम, अमीर, गरीब, लड़का, लड़की आदि सभी शरीर पर लगाए गए अस्थाई लेबल है इसलिए हमें खुद को एक तटस्थ मंच पर रखना और चीजों को निष्पक्ष रूप से देखना शुरू करना होगा ।

हमें तुरंत तैयारी शुरू कर देनी चाहिए क्योंकि हम जेल में हैं, शरीर ने हमारी वास्तविक आत्मा को वैसे ही संस्कारित कर दिया है जैसे एक अपराधी को सलाखों के पीछे रखा जाता है। और यह दुनिया इतनी अप्रत्याशित है कि किसी भी समय हमारे साथ कुछ भी हो सकता है, इसलिए हमें आध्यात्मिक दुनिया से अपने शाश्वत सार को पुनः प्राप्त करने के अपने वास्तविक उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपने मन को क्षणिक चीजों से अलग करना और उन्हें कृष्ण से जोड़ना सीखना चाहिए ।

आध्यात्मिक बुद्धि - आध्यात्मिक बुद्धि एक आंतरिक गुण है जो व्यक्ति की आत्म-जागरूकता, दया, सहानुभूति, उच्च नैतिकता, और गहरी समझ की क्षमता को दर्शाता है। आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्ति को आत्मिक संतोष, समाज के प्रति दायित्व, और एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने मंर सहायता करती है।

आध्यात्मिक बुद्धि वह आंतरिक योग्यता है जो व्यक्ति को आत्मज्ञान, आंतरिक शांति, करुणा, और नैतिक मूल्यों का विकास करने में सहायक होती है। यह बुद्धि व्यक्ति को जीवन के भौतिक और मानसिक तनावों से ऊपर उठकर एक उच्चतर उद्देश्य की प्राप्ति की दिशा में प्रेरित करती है। आध्यात्मिक बुद्धि के विभिन्न आयामों में आत्म-जागरूकता, करुणा, सहनशीलता, और संकटों का सामना करने की क्षमता शामिल है।

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार सकारात्मक और आध्यात्मिक जीवन जीने

की कुंजी वैराग्य का पीछा करना और करुणा, दयालुता और निस्वार्थता के गुणों को बढ़ावा देना है। यह गुण हमें केवल अपनी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित होने के बजाय अपने आत्म सम्मान को त्यागने और दूसरों की तत्कालिकता पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करते हैं ।

अंततः श्रीमद्भगवद्गीता सिखाती है कि खुद को परमात्मा के साथ जोड़कर, सकारात्मक और आध्यात्मिक मानसिकता को बढ़ावा देकर हम जीवन की चुनौतियों और संघर्षों के बीच भी शांति, सद्भाव और संतुष्टि पा सकते हैं । यह एक कालातीत और स्थायी संदेश है जो आज भी सभी धर्म और परंपराओं के लोगों को प्रेरित और मार्गदर्शन करता है ।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन -

सतपथी विश्वजीत, मुनियायन, बालकृष्णन, मोहनदास मोहन (जनवरी 2013) श्रीमद्भगवद्गीता के दर्शन से सुशासन की यूएनई एससीएपी की विषेषताएं और भारतीय संदर्भ में इसकी समकालीन प्रासंगिकता। भारतीय संदर्भ में भारतीय गीता सफल रही। अच्छे विकास के लिए माडल शासन के बारे में पश्चिमी साहित्य में अभी भी काफी हद तक जानकारी अज्ञात है। श्रीमद्भगवद्गीता की एक अच्छी संकल्पना और अच्छे व्यक्तित्व के विकास के सिद्धांत शासन का उपयोग भविष्य के शोधकर्ताओं द्वारा एक कौशल के रूप में किया जा सकता है। भारतीय अध्ययन के लिए एंडार्ड माडल दार्शनिक दृष्टिकोण से मूल्यवान योगदान महत्वपूर्ण है।

मणिकम रामचंद्रन, शर्मा भावना रामचंद्रन (मार्च 2015) व्यवसायिक शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य में श्रीमद्भगवद्गीता अवधारणाओ की आवश्यकता शीर्षक पर शोध अध्ययन किया । इस शोध अध्ययन द्वारा उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि श्रीमद्भगवद्गीता मानव पूंजी विकास के लिए ''अंदर से बाहर'' का दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है , जो पश्चिमी दुनिया के ''बाहर से अंदर'' के दृष्टिकोण के विपरीत है और भविष्य में मानव पूंजी विकास के लिए भगवद्गीता के महत्व पर और अधिक शोध की आवश्यकता का सुझाव दिया।

पिल्ले सुषमा, मिश्रा डॉ. पी.एल.- उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यो के प्रति शिक्षको की जागरूकता का विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि की पर प्रभाव का अध्ययन विषय पर शोध किया गया व निष्कर्ष पाया गया कि शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यो के प्रति शिक्षको की जागरूकता का उनके छात्र/ छात्राओं/ विद्यार्थियों की बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ा है।

जैन डॉ. अमिता 2018 व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियो की संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन पर शोध किया एवं निष्कर्ष में

पाया कि महात्मा गांधी के द्वारा देश की आजादी के लिए अहिंसा का पथ अपनाना उनकी आध्यात्मिक दृष्टि का ही परिणाम था। अपने परिवार, समाज और देश के लिये अपनी जवाबदारियो को निभाना आध्यात्मिक जीवन की पहली कसौटी है। वर्तमान समय में पूरे विश्व में आध्यात्मिक बुद्धि के प्रसार की जरूरत है। अगर आध्यात्मिक बुद्धि का प्रसार नहीं होगा तो इंसान केवल मशीन बनकर रह जाएगा। विश्वशांति प्रेम, भाईचारा, आंतरिक सुख सकारात्मक जीवन दृष्टि और असाधारण चेतना का मालिक होने के लिए आध्यात्म को आत्मसात करना अमृत और संजीवनी प्राप्त करने की तरह है।

उद्देश्य -

1. श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम का शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक आंकलन करना ।

2. श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम का उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का शाला की प्रकृति के आधार पर तुलनात्मक आंकलन करना ।

परिकल्पनाएँ -

H**01परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी ।

H02 **परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी ।

H**03 परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी ।

H**04 परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी ।

अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमन -

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता द्वारा रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया ।

शोध विधि -

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया ।

जनसंख्या -

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता द्वारा रायपुर के समस्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों का चयन किया गया ।

न्यादर्श -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रुप में 480 विद्यार्थियों को चुना गया ।

अध्ययन का चर -

चरों की प्रकृति -

स्वतंत्र चर - श्रीमद्भगवद्गीता दर्षन ।

आश्रित चर - आध्यात्मिक बुद्धि ।

उपकरण-

प्ररस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा आवष्यकतानुसार निम्नलिखित उपकरण का उपयोग किया गया ।

क्रमांक	**उपकरण का नाम**	**निर्माणकर्ता**
1.	गीता दर्शन मापनी	स्वनिर्मित प्रश्न
2.	आध्यात्मिक बुद्धि	के.एस. मिश्रा

02 माह का श्रीमद्भगवद्गीता आधारित शिक्षण कार्यक्रम -

02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता के दर्शन पर आधारित शिक्षण कार्यक्रम बनाया गया जिसमें सप्ताह में दो दिन 30 मिनट तक विद्यार्थियों को गीता दर्शन की जानकारी दी गयी । इसके अलावा श्रीमद्भगवद्गीता के दर्शन से संबंधित आवश्यक जानकारी भी विद्यार्थियों को उपलब्ध करायी गयी ।

श्रीमद्भगवद्गीता के दर्शन पर आधारित शिक्षण कार्यक्रम का विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का परिणाम जानने के लिये अध्ययन अवधि के ठीक पूर्व तथा अध्ययन अवधि प्रारंभ होने के 02 माह के पश्चात आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रश्नावलियों के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया । दो महीने का श्रीमद्भगवद्गीता आधारित षिक्षण कार्यक्रम के पश्चात छात्रों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास में सकारात्मक

परिवर्तन पाया गया । इस शैक्षिक कार्यक्रम में न केवल शैक्षिक ज्ञान की प्राप्ति हुई बल्कि छात्रों मे नैतिकता, आत्मनियंत्रण और जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित करने की क्षमता में वृद्धि पाई गई । इस दौरान छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलूओं पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया ।

सांख्यिकीय अभिप्रयोग -

परिकल्पना क्रमांक 01 भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी । इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया । परिणाम तालिका 1.1 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.1

शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 **माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर आंकड़े**

समूह	आध्यात्मिक बुद्धि				t
	प्री टेस्ट (N=240)		पोस्ट टेस्ट (N=240)		
	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	177.91	20.58	181.72	20.23	6.61**

t(df=239) at .05 level 1.97 and 2.60 at .01 level; ** Significant at .01 level

तालिका 1.1 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार .

- आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 177.91 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 20.58 है ।
- 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 181.72 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 20.23 है ।
- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 6.61 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए आध्यात्मिक बुद्धि पर शहरी क्षेत्र के उच्चतर

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्न्ता सिद्ध होती है ।

तालिकानुसार आध्यात्मिक बुद्धि पर शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण से शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक संवर्धन हुआ है । तालिका 1.1 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक 01 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी, अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना क्रमांक 02 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी । इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया । परिणाम तालिका 1.2 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.2

ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर आंकड़े

समूह	आध्यात्मिक बुद्धि				tt t
	प्री टेस्ट (N=240)		प्री टेस्ट (N=240)		
	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	170.85	23.89	178.60	21.49	7.70**

t(df=239) at .05 level 1.97 and 2.60 at .01 level; ** Significant at .01 level

तालिका 1.2 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार -

- आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 170.85 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 23.89 है ।

- 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 178.60 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 21.49 है ।

- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 7.70 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए आध्यात्मिक बुद्धि पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्न्ता सिद्ध होती है ।

तालिकानुसार आध्यात्मिक बुद्धि पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण से ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक संवर्धन हुआ है ।

तालिका 1.2 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक 02 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी, अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना क्रमांक 03 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी । इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया । परिणाम तालिका 1.3 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.3

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर आंकड़े

समूह	आध्यात्मिक बुद्धि		t
	प्री टेस्ट (N=240)	पोस्ट टेस्ट (N=240)	

	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय छात्र	173.91	22.92	178.51	21.39	6.32**

t(df=239) at .05 level 1.97 and 2.60 at .01 level; ** Significant at .01 level

तालिका 1.3 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार .

- आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समूह का मध्यमान (Mean) = 173.91 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 22.92 है ।
- 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समूह का मध्यमान (Mean) = 178.51 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 21.39 है ।
- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 6.32 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए आध्यात्मिक बुद्धि पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्न्ता सिद्ध होती है ।

तालिकानुसार आध्यात्मिक बुद्धि पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक संवर्धन हुआ है ।

तालिका 1.3 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक 03 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी, अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना क्रमांक 04 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी । इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया । परिणाम तालिका 1.4 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.4

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02

माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर आंकड़े

समूह	N	आध्यात्मिक बुद्धि				t
		प्री टेस्ट (N=240)		पोस्ट टेस्ट (N=240)		
		Mean	S.D.	Mean	S.D.	
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय छात्राए	240	174.86	22.22	181.81	20.32	6.95**

t(df=239) at .05 level 1.97 and 2.60 at .01 level; ** Significant at .01 level

तालिका 1.4 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार

- आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के समूह का मध्यमान (Mean) = 174.86 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 22.22 है ।
- 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के समूह का मध्यमान (Mean) = 181.81तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 20.32 है ।
- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 6.95 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए आध्यात्मिक बुद्धि पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्न्ता सिद्ध होती है ।

तालिकानुसार आध्यात्मिक बुद्धि पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक संवर्धन हुआ है ।

तालिका 1.4 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक 04 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी, अस्वीकृत की जाती है ।

निष्कर्ष

शोध से यह स्पष्ट होता है कि श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि को विकसित करने में अत्यधिक प्रभावी है। यह उनके जीवन के मानसिक, नैतिक, और भावनात्मक पहलुओं को सुदृढ़ करता है। गीता का अध्ययन छात्रों को आत्म-जागरूक, सहनशील, और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने में मदद करता है।

श्रीमद्भगवद्गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाने वाला अमूल्य मार्गदर्शक है। इसका अध्ययन शिक्षा के उद्देश्य को नए आयाम प्रदान कर सकता है।

02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के बाद ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में ज्यादा संवर्धित हुई ।

02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के बाद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की तुलना में ज्यादा संवर्धित हुई ।

इस शोध से यह निष्कर्ष निकला कि श्रीमद्भगवद्गीता के अध्ययन का विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर अत्यंत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि गीता की शिक्षाएं विद्यार्थियों की आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, और मानसिक संतुलन में वृद्धि करने में सहायक होती हैं। गीता के सिद्धांत विद्यार्थियों में न केवल मानसिक शांति प्रदान करते हैं, बल्कि उन्हें समाज के प्रति दयालु और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित भी करते हैं।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि गीता का अध्ययन विद्यार्थियों के मनोविज्ञान पर गहरा सकारात्मक प्रभाव डालता है। इससे विद्यार्थियों में न केवल मानसिक शांति का विकास होता है, बल्कि यह उन्हें कठिन परिस्थितियों में संतुलित रहने और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है। यह पाया गया कि गीता के शिक्षण से विद्यार्थियों में आत्म-जागरूकता, सहानुभूति और सहनशीलता जैसे गुणों का विकास होता है, जो उन्हें एक अच्छे और सशक्त जीवन की ओर अग्रसर करते हैं।

सुझाव -

1.शैक्षिक पाठ्यक्रम में गीता के अंशों को शामिल करनाः गीता के शिक्षण को विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में शामिल करके उनके मानसिक और आध्यात्मिक

विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है।

2.आध्यात्मिक कक्षाओं का आयोजनः विद्यार्थियों की मानसिक और भावनात्मक क्षमता को बढ़ाने के लिए नियमित आध्यात्मिक कक्षाओं का आयोजन करना लाभदायक हो सकता है।

3.योग और ध्यान का समावेशः गीता के शिक्षण के साथ-साथ योग और ध्यान जैसे अभ्यासों का समावेश विद्यार्थियों के आंतरिक संतुलन को और अधिक मजबूत कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

- शर्मा श्रीराम आचार्य एवं पंड्या डॉ. प्रणव - शिक्षण प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता, प्रकाशक - युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा ।
- मिश्रा डॉ. आद्या प्रसाद - श्रीमद्भगवद्गीता, प्रयागराज, अक्षयवट प्रकाशन, उपोद्घात ।
- पचोरी डॉ. गिरीश उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक प्रथम संस्करण 2009 इंटरनेशनल पब्लिशिग हाउस मेरठ ।
- श्रीवास्तव डी. एन सांख्यिकीय गणना मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2 ।
- पाठक पी डी 1982-83 शिक्षा मनोविज्ञान 13 संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर आगरा मेरठ प्रकाशन ।
- पाण्डेय डॉ. राम शुक्ल 1996 शिक्षा का अर्थ, शिक्षा का उदेश्य विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2 ।
- कपिल डॉ. एच. के. 2007 अनुसंधान विधियां भार्गव बुक हाउस आगरा ।
- रिसर्च डाइजेस्ट, अप्रैल-जून 2008 वाहयूम-1 इशू-4 ।
- रिसर्च डाइजेस्ट, बाहयूम-2, अक्टूबर-दिसम्बर 2008 ।
- शर्मा आर. 2009 अनुसंधान परिचय लाल बुक डिपो ।
- शर्मा आर. 2009 परिकल्पनाओं का प्रतिपादन, शिक्षा अनुसंधान मेरठ आर. लाल बुक डिपो।
- सक्सेना एन.आर. स्वरुप 2011 षिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत आर. लाल बुक डिपो मेरठ ।
- शर्मा डॉ. आर.ए. 2011 शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया आर. लाल बुक डिपो मेरठ ।
- कुशवाहा एस.एल. - 2015, आध्यात्मिक बुद्धि प्रत्यय, परीक्षण एवं विकास ।
- जैन डॉ. अमिता - 2018, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन ।